भारतेंदु युगीन पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चन्द्र एक कुशल पत्रकार, कवि, नाटककार, निबन्धकार एवं आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। अपने अल्प जीवनकाल में ही इन्होंने इतना महत्वपूर्ण कार्य किया कि इनका युग भारतेंदु युग के नाम से विख्यात हो गया। वास्तव में ये हिन्दी साहित्य गगन के इन्दु ही थे। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में भारतेंदु के अविस्मरणीय योगदान के फलस्वरूप ही सुविख्यात पाश्चात्य साहित्यकार **प्रियर्सन** ने लिखा है–

हरिश्चन्द्र ही एकमात्र ऐसे सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, जिन्होंने अन्य किसी भी भारतीय लेखक की अपेक्षा देशी बोली में रचित साहित्य को लोकप्रिय बनाने में सर्वाधिक योगदान दिया।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही सामाजिक व सांस्कृतिक पुनरूत्थान और राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने के प्रयासों का श्रीगणेश हो गया था। इस क्रांति के बाद पूरे भारत पर अंग्रेजों का शासन हो गया और भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर विक्टोरिया के हाथों में चला गया। परिणाम स्वरूप दमनकारी नीतियों में वृद्धि हुई और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कई प्रकार के खतरों में पड़ गई। साथ ही इसी क्रांति के फलस्वरूप सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक नवीन चेतना का विकास हुआ और उपनिवेश विरोधी तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की चेतना जाग्रत हुई। इसकी किलता से हताश भारतीय जनता को पुनः जाग्रत करने और भारती संस्खति के उज्जवल पक्षों को प्रकट करके लोगों में नवजीवन का संचार करने में हिंदी पत्रकारिता का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के समन्वय ने इस पुनर्जागरण में विशिष्ट भूमिका निभाई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक जातीय, साम्प्रदायिक, धार्मिक पत्र भी निकले पर कहीं न कहीं वे सब देशप्रेम की भावना और राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हुए थे।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का पदार्पण हिंदी पत्रकारिता की एक युगांतकारी घटना थी। उनके आगमन से हिंदी पत्रकारिता को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके असाधारण योगदान को देखते हुए हिंदी पत्रकारिता के 1867 से लेकर 1900 तक के कालखंड को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। इस काल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका आधुनिक हिंदी साहित्य व पत्रकारिता के पुरोधा भारतेंदु हरिश्चन्द्र की रही है। उन्होंने न केवल स्वयं समाचार पत्रों व पत्रिकाओं का संपादन किया, बल्कि लेखकों व संपादकों का एक ऐसा समूह भी तैयार किया जिसने हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने के साथ साथ राष्ट्रीय चेतना जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समूह को भारतेंदु मण्डल के नाम से जाना जाता है।

भारतेंदु के समय देश में नवीन राजनैतिक सामाजिक चेतना का उदय प्रारम्भ हो गया था। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों तथा लेखों पर जन सामान्य अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगा तथा उनमें व्यक्त विचारों से उद्वेलित भी

होने लगी। भारतेंदु के बारे में हिंदी साहित्य कोश (भाग–2) में लिखा है–भारतेंदु हरिश्चंद्र नवयुग के अग्रदूत और हिंदी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता थे। उनकी रचनाएं देशप्रेम से ओतप्रोत हैं। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की सर्वतोमुखी अधोगति का हृदयविदारक चित्र अंकित किया और उसके भावी उज्जवल भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न देखा।

भारतेंदु और अन्य पत्रकारों ने संपूर्ण भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता को पहचानते हुए सांस्कृतिक पुनरूत्थान को पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। इस कारण तत्कालीन पत्रकारों ने साहित्यकार, संपादक, विचारक, समाज सुधारक और क्रांतिकारी आदि बहुमुखी दायित्वों का निर्वहन किया। सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जगाने के साथ साथ ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरोध को दोहरी भूमिका उन्होंने अत्यंत कुशलता से निभाई।

भारतेंदु युग का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका कविवचन सुधा से होता है। इसके माध्यम से हिंदी भाषा के परिष्कार और खड़ी बोली हिंदी गद्य को व्यवस्थित रूप देने के साथ–साथ राष्ट्रीयता की भावना का भी व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार हुआ। उन्होंने स्वदेशी के प्रचार और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध करने के लिए अपनी पत्रकारिता को माध्यम बनाया और स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए भारतीयों का आह्वान किया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी अपनाने पर जोर, आर्थिक विकास, सामाजिक बुराईयों को दूर करना, आधुनिक प्रगति से अवगत कराना, शिक्षा के प्रचार प्रसार आदि विषयों को इसमें महत्व दिया जाता था।

इसमें साहित्य के साथ साथ सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों व नवजागरण से संबंधित सामग्री भी प्रकाशित होती थी। इसमें ब्रिटिश शासन की कठोर नीतियों की कटु आलोचना और स्वाधीनता के लिए प्रेरित करने वाले लेखों की प्रधानता रहती थी और इसका तो आदर्श वाक्य ही स्वत्व निज भारत गहे था। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत सामग्री सुसंगठित ढंग से प्रकाशित होती थी क्योंकि इसमें जाति प्रथा, बाल विवाह के विरोध, सशिक्षा, विधवा विवाह के समर्थन आदि के साथ–साथ भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषताओं को भी सम्मिलित किया जाता था।

भारतेंदु के ही संपादन में हरिश्चंद्र मैगजीन का प्रकाशन 1873 में आरंभ हुआ, जिसका नाम बाद में हरिश्चंद्र चंद्रिका हो गया। अपनी समकालीन पत्रिकाओं में यह सर्वाधिक सुव्यवस्थित ढ़ंग से संपादित पत्रिका थी। इस पत्रिका ने राष्ट्रीय चेतना की भावना को तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रप्रेम को जगाना, सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करना, परिष्कृत हिंदी को बढ़वा देना और राजनीतिक जागरूकता लाना इसके प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित था। समाज का प्रतिनिधित्व और जनमानस का मार्गदर्शन इसकी प्रमुख विशेषताएं थीं। अपनी स्पष्टवादिता और ब्रिटिश सरकार के विरोधी लेखों के कारण इसे अनेक बार सरकारी प्रताड़ना भी झेलनी पड़ी। इस पत्रिका ने हिंदी पत्रकारिता का आदर्श स्वरूप स्थापित किया।

1874 में नारी शक्ति के विकास और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के उद्देश्य को लेकर भारतेंदु ने बालाबोधिनी नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया जो उस समय महिलाओं की प्रथम मासिक हिंदी पत्रिका थी और इसका प्रकाशन उस समय एक क्रांतिकारी कदम था। इसका प्रमुख उद्देश्य ही नारी को सुशिक्षित करके उसे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। इसमें प्रगतिशील दृष्टिकोण से महिला समस्याओं पर आलेख प्रकाशित होते थे। नारी शिक्षा और सशक्तिकरण की दृष्टि से इस पत्रिका

का हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान है।

भारतेंदु की राष्ट्रीय चेतना की भावना और उत्कृष्ट पत्रकरीय कौशल से प्रभावित होकर अनेक पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हुए, जिनमें हिंदी प्रदीप (1877), भारत मित्र (1878), सारसुधानिधि (1879), केसरी (1881), ब्राम्हण (1883), हिंदोस्थान (1855) आदि प्रमुख थे। इनके माध्यम से भारतीय जनमानस को जाग्रत करके स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया गया। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के बावजूद इस संकटकाल में भी भारतेंदु युग के पत्रकारों ने भारतीय में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करने की इस कठिन चुनौती को स्वीकार किया।

भारतेंदु मंडल के एक वरिष्ठ सदस्य बालकृष्ण भट्ट के संपादन में 1877 में हिंदी प्रदीप नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसका हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह उस युग की सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका थी। इसके द्वारा हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रबल समर्थक किया गया। साहित्य के साथ साथ इसकी सामग्री राष्ट्रीय चेतना से भी ओतप्रोत होती थी। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिस्थितियों का सटीक चित्रण करते हुए जनजागरण के आंदोलनों में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी प्रबल इच्छाशक्ति, दृढ़–संकल्प और उच्च आदर्शों के कारण अनेक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी यह पत्रिका निरंतर 35 वर्ष तक प्रकाशित होती रही जो इसकी एक विशिष्ट उपलब्धि है।

'हिंदी प्रदीप' पर बाल गंगाधर तिलक के क्रांतिकारी विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे इसमें सामाजिक व सांस्कृतिक जागरण के साथ–साथ अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के प्रति असंतोष को भी प्रकट किया जाता था। ब्रिटिश सरकार के तीव्र विरोध के परिणामस्वरुप ही इसे सरकार के कोप का भाजन बनना पड़ा और इसे हमेशा के लिए बंद करना पड़ा। लेकिन इस पत्र ने राष्ट्रीय चेतना की भावना और अभिव्यक्ति की अजादी का जो प्रश्न उठाया था, उसे परवर्ती पत्रकारों ने भी जारी रखा।

'भारत मित्र' (1878) भी इस युग का एक प्रमुख लोकप्रिय पत्र था, जो कलकत्ता से प्रकाशित होता था। यह पत्र बहुत कम समय में ही लोकप्रिय हो गया और पाक्षिक से साप्ताहिक भी प्रकाशित होने लगा। बालमुकुंइ गुप्त के संपादन काल में इसने भारत के सास्कृतिक व सामाजिक पुनरुत्थान में विशेष योगदान दिया। इसके विचारोत्तेजक लेखों ने भारतीय जनता को उद्वेलित करके राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल विभाजन की अंग्रेजों की देश को खंडित करने की नीति के विरोध में संपूर्ण भारत में जो आंदोलन चला, एसका नेतुत्व पत्रकारिता के क्षेत्र में 'भारत मित्र' ने ही किया था और इसकी कटु आलोचना भी की थी। अन्य पत्र–पत्रिकाओं ने भी इसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर लोगों को इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरुक किया और राष्ट्रीय स्तर पर जनमत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य किया।

'सारसुधानिधि'(1879) ने भी स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासकों के क्रूर हाथों से भारतीय जनता को मुक्त कराने के लिए दसने सक्रिय प्रयास किए और जनता को जाग्रत करने के साथ–साथ सत्ता के वरुिद्ध भी अपने संघर्ष को जारी रखा। इसमें राजनीतिक विषयों पर गहन अध्ययन के बाद सारगर्भित लेख व टिप्पणियां प्रकाशित हेाती थी जो भारतीय जनमानस को राजनीतिक विषयों पर जागरुक करते थे।

1881 में 'केसरी' का प्रकाशन आरंभ हुआ जो राष्ट्रीय चेतना का प्रबल समर्थन करने वाला

प्रमुख पत्र था। सन् 1890 में भारतीय राजनीति के पुरोधी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक इसके संपादक बने। उनकी उग्र विचारधारा की झलक इसके संपादकीय में भी स्पष्ट रुप से दिखाई देती थी। जनता को जागरुक करना और उन्हें उत्साहित करके स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सर्वस्व अर्पण करने की भावना पैदा करना की इसका मूल उद्देश्य था।

1883 में प्रतापनारायण मिश्र के संपादन में 'ब्राह्मण' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिसमें उस समय के सभी प्रतिष्ठित लेखकों के लेख प्रकाशित होते थे। स्वदेश–प्रेम और हिंदी भाषा को भढ़ावा देने के अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं जैसे दहेज की समस्या, अशिक्षा, धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक जागरुकता की कमी, नारी शिक्षा की आवश्यकता आदि पर भी इस में लेख प्रकाशित होते थे। अपने तेरह वर्षों के प्रकाशन काल में इसमें हिंदी जगत को अनेक श्रेष्ठ निबंध दिए और हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह पत्र हास्य–व्यंग्य को भी महत्व देता था और समालोचना शीर्षक से पुस्तक–समीक्षा भी प्रकाशित होती थी। इसकी वशेषता यह थी कि इसके माध्यम से लोकमत को समाज और ब्रिटिश सरकार तक निर्भीकता से पहुंचाने का प्रयास किया गया, जिससे इसे जनमानस में पर्याप्त लोकप्रियता मिली।

भारतीयों की समस्याओं के प्रति ब्रिटिश अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करने और भारतीयों में राष्ट्रीय जाग्रत करने के लिए 1885 में अंग्रेजी त्रैमासिक पत्र हिंदोस्थान का प्रकाशन आरंभ किया गया। बाद में हिंदी और उर्दू में भी समाचार प्रकाशित होने लगे। जब यह हिंदी भाषी क्षेत्र का प्रथम दैनिक हिंदी पत्र बना तो पंडित मदन मोहन मालवीय इसके संपादक बने। अपने 27 वर्षों के प्रकाशन काल में इस पत्र का संपादन बालमुकुंद गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र जैसे यशस्वी पत्रकारों ने भी किया। इसमें राष्ट्रीय विचारधारा, देश की राजनीतिक गतिविधियों, सामाजिक समस्याओं, भारतीय संस्कृति, हिंदी भाषा और साहित्य सहित भिन्न भिन्न विषयों पर आलेख प्रकाशित होते थे। इसने कांग्रेस की विचाारधारा का समर्थन किया और जनता को भी स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूक करने और कांग्रेस की नीतियों के जनता में प्रचार प्रसार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1891 में बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन ने नागरी नीरद का प्रकाशन किया। राष्ट्र की चेतना को जगाना और अंग्रेजों के काले कारनामों और उत्पीड़न का पर्दाफाश करना इस पत्र का प्रमुख उद्देश्य था। इस पत्र की मूल विषयवस्तु भारतीयों को जाग्रत करना तथा सत्य, न्याय और कर्तव्यनिष्ठा का प्रसार करना तथा जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना था।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतेंदु युगीन पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर ही सर्वोपरि था। साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से जनमानस को एक नवीन दृष्टि प्रदान करने और नवजागरण लाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस युग में राष्ट्रीयता की भावना के लिए उपयुक्त वातातरण तैयार किया गया है जिसे परवर्ती पत्रकारों ने आगे बढ़ाया। सामाजिक व राजनीतिक सुधार के साथ–साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी इन पत्रकारों की सराहनीय भूमिका रही। राष्ट्रीय चेतना के इस युग में पत्रकारों का उद्देश्य किसी भी प्रकार की व्यावसायिक पत्रकारिता को प्रश्रय देना नहीं था बल्कि पत्रकारिता का सही दिशा में सदुपयोग करते हुए जनमानस में वह जोश एवं उमंग भरना था जिसके द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ वह स्वयं खड़े होने का साहस कर सकें।

भारतीयों की सामाजिक व राजनीतिक दशा का यथार्थ चित्रण और ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का साहसपूर्वक विरोध करना

तत्कालीन परिस्थितियों में एक असाधारण कार्य था। इसके अलावा पाठकों की अनभिज्ञता और अरूचि के बावजूद अपने आदर्शों के कारण इस युग की पत्रकारिता ने विपरीत परिस्थितियों में भी अनुकरणीय कार्य करके पत्रकारिता के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित किए। तत्कालीन पत्रकारों ने कर्मठता, निर्भीकता और स्पष्टवादिता जैसे गुणों द्वारा विपरीत परिस्थिति में भी राष्ट्रीय चेतना की दिशा मकें निरंतर उल्लेखनीय कार्य किया जो आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। इस युग की पत्रकारिता को राष्ट्रीय चेतना के विकास की नींव कहा जा सकता है, जिस पर सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनीतिक पुनर्जागरण तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उपर्युक्त वातावरण निर्मित करने का महल बना।

संदर्भ

1. डा. कृष्ण बिहारी मिश्र– हिंदी पत्रकारिता 1998
2. डॉ. सुशीला जोशी–हिंदी पत्रकारिता–विकास और विविध आयाम 2000
3. शिव कुमार दुबे–हिंदी पत्रकारिता–इतिहास एवं स्वरूप 1992
4. वंशीधर लाल–भारतेंदु युगीन हिंदी पत्रकारिता 1986
5. डॉ. अर्जुन तिवारी–स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता 1982
6. डॉ. वेदप्रताप वैदिक–हिंदी पत्रकारिता–विविध आयाम 2002
7. डॉ. संजीव भानावत–पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम 1995

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.